Pratnakīrti, Volume 5, Issue 2, 2024 ISSN: 2322-0694

'उमरावजान-अदा' इति उर्दू-उपन्यासस्य श्वेतकेतुकृतः संस्कृतानुवादः

प्रभुनाथ द्विवेदी

पूर्वपीठिका

दरम्यान् मई-जून, 2017 ई० की बात होगी। पार्श्वनाथ-विद्यापीठ (वाराणसी) में 'प्राकृत-भाषा एवं साहित्य' सीखने-सिखाने की कार्यशाला लगी थी। इस बीच (अपने छात्र-जीवन से अध्यापक और शोधी-जीवन जीने के बीच) मुझे प्राकृत-भाषा का मरम समझ आ गया था। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के अन्तस्तल तक पहुँचने के इस राह हमने कभी क़दम न धरे; यह बात कचोटती रहती। सूचना मिलते ही बतौर 'छात्र' दाखिला लिया और प्राकृत के पाठ शुरू हुए। 21 दिन की कार्यशाला थी। हर दिन एक 'स्पेशल लेक्चर' प्राकृत-साहित्य पर नियत था। श्रद्धेय स्वर्गीय प्रभुनाथ द्विवेदी जी 'प्राकृत-कथाओं' के शिल्प, विन्यास, भाषा और रचनाधर्मिता पर प्रायः बुलाए जाते थे। एक दिन ख़याल यह आया कि 'क्यों न अपनी हठधर्मिता छोड़ द्विवेदी जी को 'उमराव जान अदा' की संस्कृत-प्रति भेंट की जाए! आख़िर बचपन से हितैषी रहे हैं और गाहे-बगाहे रचनात्मकता की ओर उन्मुख किए रहते हैं।'

बात यह थी कि इससे चार-छह महीने पहले ही मैंने मिर्जा मोहम्मद हादी रुस्वा के विश्रुत उर्दू उपन्यास 'उमराव जान अदा' का संस्कृत-अनुवाद पूरा किया था और प्रकाशित प्रतियाँ; योग्य पाठकों का मुँह बाए इन्तजार कर रही थीं। जिन लोगों का प्रभुनाथ जी से परिचय हो उन्हें तो नहीं, लेकिन जो नहीं जानते; जान लें कि आप समकालीन संस्कृत-कथा-लेखकों की अगली पङ्क्ति में आते थे। सो ऐसे कथा-लेखक को 'उमराव-जान-अदा' की संस्कृत-काया से अपरिचित रखना अच्छा न मालूम हुआ। एक दिन इस ख़याल से कि सब न देखें और तमाशा न बने; एक प्रति उठाई और उसे 'गिफ्ट-पैक' के कागज़ से लपेट, पैकेट बना लिया। नियत समय पर जब द्विवेदी जी ने अपना 'क्लास्' पूरा किया और शाम को अवकाश हो गया, मैंने चुपके से यह कहते कि - 'किसी लेखक ने यह किताब आप तक पहुँचाने को मुझे दिया था'; पैकेट उनके हाथ रख दी। अब जो देखता हूँ कि पैकेट् यहीं खोला चाहते हैं तो मैंने हाथ जोड़ा कि घर जा कर खोलिएगा। अब जिद पकड़ बैठे कि 'भाई किताब मेरी है तो खोलने दीजिए!'... बारे कितनी मिन्नतों के बाद इस पर राजी हुए और सबके सामने किताब खोलने की बला टली। रात के नौ बजे फोन किया और मारे खुशी फूले न समा रहे थे कि एक अच्छी रचना, एक अच्छा अनुवाद उन्हें पढने को मिला। फिर वादा किया कि पूरी किताब पढ कर चर्चा करेंगे। महीना भर पढते रहे और बीच-बीच में फोन कर मुझे साधुवाद दिया किए। एक महीने बाद घर बुलाया और अनुवाद की भारी-भरकम प्रशंसा के बाद दो पन्ने मुझे देते हुए यह कहा कि ''अन्यथा न लीजिएगा। यह दो पृष्ठों की समीक्षा इस अनुवाद पर मैंने लिख दी है। अक्षम हूँ इसलिए इसे 'संस्कृत-प्रतिभा' तक पोस्ट करने की जहमत आप पर डाल रहा हूँ। कृपया इसे पोस्ट कर दीजिएगा।''

Lalashankar Gayawal and Umesh Kumar Singh (Ed.) pp. 131-135
© Pratnakīrti Oriental Research Institute, Vārāṇasī, U.P., India
Recieved 22 November 2024, Accepted 16 December 2024
This paper is available at https://www.pratnakirti.com/Home/Index

मैंने पन्ने ले लिए और घर लाकर रख दिए। सोचता रहा कि ''मेरी प्रकृति जानते हुए भी द्विवेदी जी ने मेरी ही पुस्तक की समीक्षा मुझे क्यों दी?' भेजना था तो स्वयं भेज देते। पोस्ट के लिए मुझे क्यों दिया? क्या यह मुझ पर अनुकम्पा, कृपा या अनुग्रह का भाव जतलाने का उपक्रम है? पर वह तो जानते हैं कि ऐसे किसी उपक्रम की प्रतिक्रिया मेरी ओर से क्या होगी! फिर यह क्या है?".... इसी तरह की कुण्ठा में डूबते-उतराते महीनों और आखिरकार साल बीत गया। फिर वह दिन भी आया कि यह दो पन्ने फाइलों के बण्डल में गुम हो गए। पिछले महीने किसी दिन की शाम के वक़्त अचानक एक फाइल से यह पन्ने फिर से झाँक उठे और सारी स्मृतियाँ तरो ताजा हो गईं। दिलो दिमाग़ पर पता नहीं क्या असर तारी हुआ कि इसे मंजरे आम तक लाने की सूझी। भला हो 'प्रत्नकीर्ति' के विद्वान् सम्पादकों का कि आपने इसे इस लायक़ समझा और द्विवेदी जी की हस्त-लिखित सामग्री को यथावत् स्कैन् कर छापने की मंशा ज़ाहिर की। श्रद्धेय स्वर्गीय द्विवेदी जी की आत्मा से क्षमा का अभ्यर्थी-

श्वेतकेतु- वाराणसी

समीक्षा

अद्भुतोऽयम् उर्दू-उपन्यासस्ततोऽपि विलक्षणोऽस्यैषः संस्कृतानुवादः । एकत इमं संस्कृतानुवादं निपुणमध्येमि, अपरतोऽनुवाद सहृदयमित्रं श्वेतकेतुं (मूलं नाम डॉ० प्रतापकुमारमिश्रम्) स्निग्धमनुस्मरामि। द्वयोर्मध्ये यदनुभवामि तत्तु किञ्चिदनिर्वचनीयमेव क्व मिर्जा-'रुस्वा'-विरचित उर्दू-भाषया विश्वविख्यात उपन्यासः (क्व चात्यन्तं सङ्कोचशीलो युवजनः श्वेतकेतुः संस्कृतोद्यानस्य नवकिसलयः। उर्दूभाषया सह मे मनागपि परिचयो नास्ति । केचन सन्ति संस्कृतज्ञा बहुभाषाविदो ये फारसी-अरबी-उर्दू-भाषामपि जानान्ति तेष्वेवायं श्वेतकेतुरपि, अन्यथा तादृशमुर्दूभाषाविचितं तमुपन्यासं कथं हस्तामलकवत्परिचिनोति। उपन्यासस्यास्यैष अनुवाद एव व्यनक्ति श्वेतकेतोर्गहनं गभीरमध्यवयमपि चानुवादकर्म प्रति लगनं नैष्ठिकं च समर्पणम्। मन्ये, अनुवादकर्मणि निरतस्यानुरक्तस्य तस्य क्षुत्पिपासे अपि विस्मृते स्याताम्। अहो, तन्मयतैव प्रतिफलिता प्रसूतिः।

अस्त्येव 'उमराव-जान-अदा' नाम कश्चिद् विशिष्ट उपन्यास प्रकार संवादप्रसारः। अधुना यः साक्षात्काराात्मको विधिरथवा, आत्मकथापरः प्रकारः संवादानां स एव पुञ्जीभूतविषयरूपो विघटनघटनन्यास उपन्यासः। अत्रोपन्यासे 'उमराव-जान' अस्ति नायिका नायको वा प्रमुखं चरित्रम्। नेदं क्वचित्काल्पनिकं चरित्रम्। उपन्यासकृतो 'मिर्जा-रुस्वा'-महोदयस्य मनश्चिन्तिताः प्रश्ना मुखाद्बहिरायाताः समुद्घाटयन्ति उमराव-जान इत्यस्या जीवनपटस्यैकैकं तन्तुजातम्। तदानीन्तनस्योच्चवर्गीयानां मुस्लिमजनानां कालानुरोधिप्रवृत्तं वृत्तं विशदं निरूपयत्येष उपन्यासः। अपि च, किं किं न करोति कारयति च नियतिः? तस्या रहस्यं को विज्ञातुमर्हति? केवलम् 'उमराव-जान'-सदृक्षा जना एव येषामुपरि पतति प्रहारस्तस्याः। कथं काचिद् बालिकाऽपहृता गणिकानां प्रकोष्ठं नीयते विक्रीयते? अपि च तत्र तस्याः का गतिरविगणय्य मतिं विमतिं वा, पुत्तलिकानर्तनमिवानभीप्सितं नूतनं जीवनं, नियतिचक्रभ्रमणमेव भाग्यमित्येतत्सर्वं साधु विशदयति मधुरविषमरणं वृत्तमिदं पटुरुचिररचना वल्गुवचनाऽफल्गुकलना।

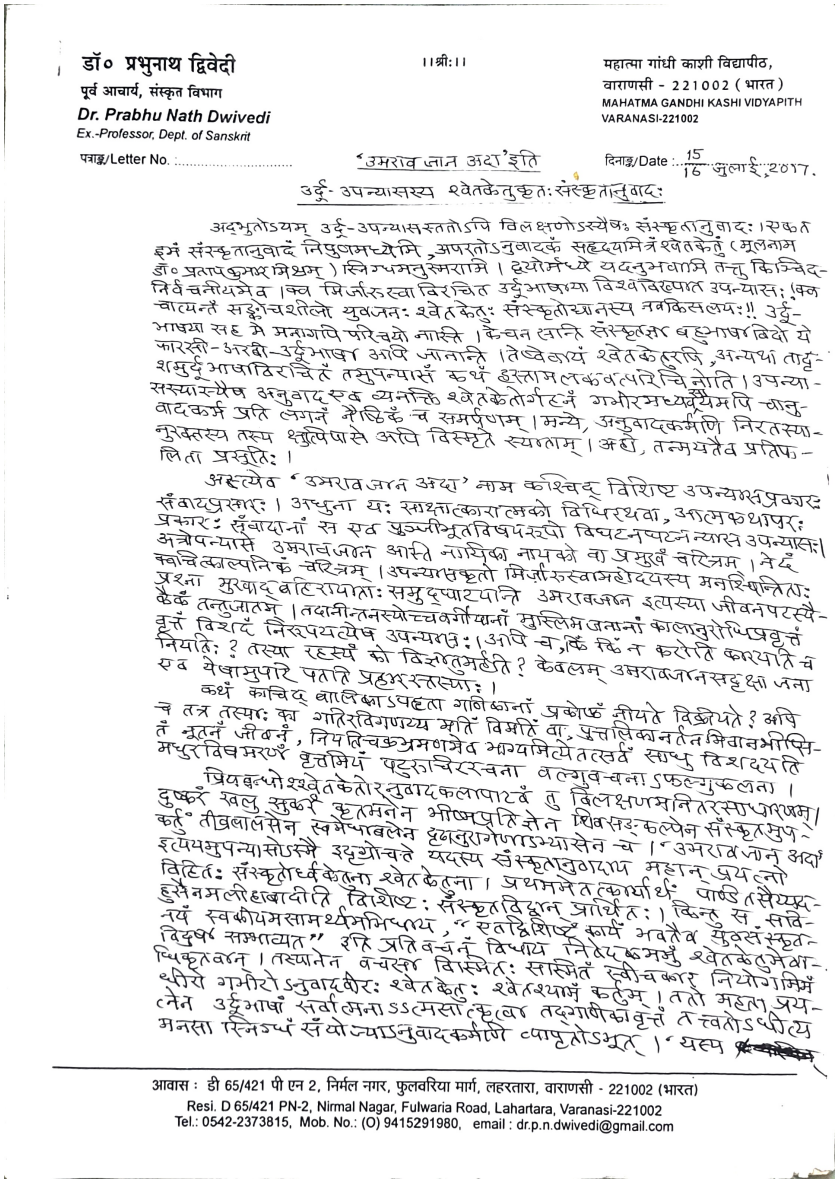

डॉ० प्रभुनाथ द्विवेदी
पूर्व आचार्य, संस्कृत विभाग
Dr. Prabhu Nath Dwivedi
Ex.-Professor, Dept. of Sanskrit

।।श्रीः।।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी - 221002 (भारत)
MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH
VARANASI-221002

पत्राङ्क/Letter No. ....

दिनाङ्क/Date : 15/16 जुलाई, 2017.

'उमराव जान अदा' इति
उर्दू-उपन्यासस्य श्वेतकेतुकृतः संस्कृतानुवादः

अद्भुतोऽयम् उर्दू-उपन्यासस्ततोऽपि विलक्षणोऽस्यैषः संस्कृतानुवादः। एकत इमं संस्कृतानुवादं निपुणमध्येमि, अपरतोऽनुवादकं सहृदयमित्रं श्वेतकेतुं (मूलनाम डॉ० प्रतापकुमार मिश्रम्) स्निग्धमनुस्मरामि। द्वयोर्मध्ये यदनुभवामि तत्तु किञ्चिद-निर्वचनीयमेव। क्व मिर्जारुस्वाविरचित उर्दूभाषया विश्वविख्यात उपन्यासः! क्व चात्यन्तं सङ्कोचशीलो युवजनः श्वेतकेतुः संस्कृतोद्यानस्य नवकिसलयः!! उर्दूभाषया सह मे मनागपि परिचयो नास्ति। केचन सन्ति संस्कृतज्ञा बहुभाषाविदो ये फारसी-अरबी-उर्दूभाषा अपि जानन्ति। तेष्वेवायं श्वेतकेतुरपि, अन्यथा तादृशमुर्दूभाषाविरचितं तमुपन्यासं कथं हस्तामलकवत्परिचिनोति। उपन्यासस्यास्यैष अनुवाद एव व्यनक्ति श्वेतकेतोर्गहनं गभीरमध्यवसायमपि चानुवादकर्म प्रति लगनं नैष्ठिकं च समर्पणम्। मन्ये, अनुवादकर्मणि निरतस्यानुरक्तस्य तस्य क्षुत्पिपासे अपि विस्मृते स्याताम्। अहो, तन्मयतैव प्रतिफलिता प्रस्तुतिः।

अस्त्येव 'उमरावजान अदा' नाम कश्चिद् विशिष्ट उपन्यासप्रकारः संवादप्रकारः। अधुना यः साक्षात्कारात्मको विधिरथवा, आत्मकथापरः प्रकारः संवादानां स एव पुञ्जीभूतविषयरूपो विघटनघटनन्यास उपन्यासः। अत्रोपन्यासे उमरावजान अस्ति नायिका नायको वा प्रमुखं चरित्रम्। नेदं क्वचित्काल्पनिकं चरित्रम्। उपन्यासकृतो मिर्जारुस्वामहोदयस्य मनश्चिन्तिताः प्रश्ना मुखाद् बहिरायाताः समुद्घाटयन्ति उमरावजान इत्यस्या जीवनपरस्यैकैकं तन्तुजातम्। तदानीन्तनस्योच्चवर्गीयाणां मुस्लिमजनानां कालानुरोधिप्रवृत्तं वृत्तं विशदं निरूपयत्येष उपन्यासः। अपि च, किं किं न करोति कारयति च नियतिः? तस्या रहस्यं को विज्ञातुमर्हति? केवलम् उमरावजानसदृक्षा जना एव येषामुपरि पतति प्रहारस्तस्याः।

कथं काचिद् बालिकाऽपहृता गणिकानां प्रकोष्ठं नीयते विक्रीयते? अपि च तत्र तस्याः का गतिरविगणय्य मतिं विमतिं वा, पुत्तलिकानर्तनमिवानभीप्सितं नूतनं जीवनं, नियतिचक्रभ्रमणमेव भाग्यमित्येतत्सर्वं साधु विशदयति मधुरविषमरणं वृत्तमियं पटुरुचिररचना वल्गुवचनाऽफल्गुकलना।

प्रियबन्धोश्श्वेतकेतोरनुवादकलापाटवं तु विलक्षणमनितरसाधारणम्। दुष्करं खलु सुकरं कृतमनेन भीष्मप्रतिज्ञेन शिवसङ्कल्पेन संस्कृतमुपकर्तुं तीव्रलालसेन स्वमेधाबलेन दृढानुरागेणाऽभ्यासेन च। 'उमराव जान अदा' इत्ययमुपन्यासोऽस्मै ईदृग्रोचते यदस्य संस्कृतानुवादाय महान् प्रयत्नो विहितः संस्कृतोर्ध्वकेतुना श्वेतकेतुना। प्रथममेतत्कार्यार्थं पण्डितसैय्यद-हुसैनमलीहाबादीति विशिष्टः संस्कृतविद्वान् प्रार्थितः। किन्तु स सविनयं स्वकीयमसामर्थ्यमभिधाय, "एतद्विशिष्टं कार्यं भवतैव सुष्ठु संस्कृतविदुषा सम्भाव्यते" इति प्रतिवचनं विधाय निवेदकममुं श्वेतकेतुमेवाधिकृतवान्। तस्यानेन वचसा विस्मितः सस्मितं स्वीचकार नियोगमिमं धीरो गभीरोऽनुवादवीरः श्वेतकेतुः श्वेतश्यामं कर्तुम्। ततो महता प्रयत्नेन उर्दूभाषां सर्वात्मनाऽऽत्मसात्कृत्वा तद्गणिकावृत्तं तत्त्वतोऽधीत्य मनसा स्निग्धं संयोज्याऽनुवादकर्मणि व्यापृतोऽभूत्। 'यस्य

आवास : डी 65/421 पी एन 2, निर्मल नगर, फुलवरिया मार्ग, लहरतारा, वाराणसी - 221002 (भारत)
Resi. D 65/421 PN-2, Nirmal Nagar, Fulwaria Road, Lahartara, Varanasi-221002
Tel.: 0542-2373815, Mob. No.: (O) 9415291980, email : dr.p.n.dwivedi@gmail.com

प्रियबन्धोश्श्वेतकेतोरनुवादकलापाटवं तु विलक्षणमनितरसाधारणम्। दुष्करं खलु सुकरं कृतमनेन भीष्मप्रतिज्ञेन शिवसङ्कल्पेन संस्कृतमुपकर्तुं तीव्रलालसेन स्वमेधाबलेन दृढानुरागेणाभ्यासेन च। 'उमराव-जान-अदा' इत्ययमुपन्यासोऽस्मै ईदृग्रोचते यदस्य संस्कृतानुवादाय महान् प्रयत्नो विहितः संस्कृतोर्ध्वकेतुना श्वेतकेतुना। प्रथममेतत्कार्यार्थं पण्डित-सैय्यद-हुसैन-मलीहाबादीति विशिष्टः संस्कृत विद्वान् प्रार्थितः।

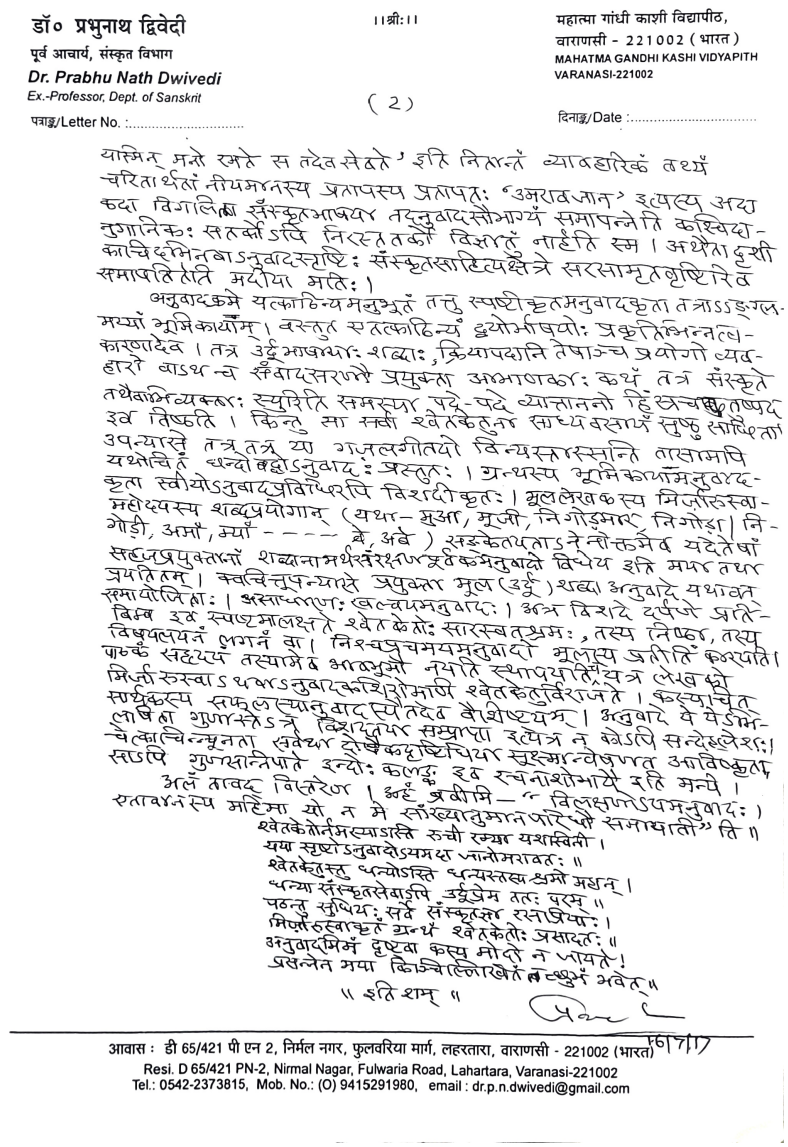

डॉ० प्रभुनाथ द्विवेदी
पूर्व आचार्य, संस्कृत विभाग
Dr. Prabhu Nath Dwivedi
Ex.-Professor, Dept. of Sanskrit

।।श्रीः।।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी - 221002 (भारत)
MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH
VARANASI-221002

(2)

पत्राङ्क/Letter No. :..............................

दिनाङ्क/Date :..............................

यस्मिन् मनो रमते स तदेव सेवते' इति नितान्तं व्यावहारिकं तथ्यं चरितार्थतां नीयमानस्य प्रतापस्य प्रतापतः 'उमरावजान' इत्यस्य अद्य कदा विगलितं संस्कृतभाषया तदनुवादसौभाग्यं समापन्नेति कश्चिदनुमानिकः सतर्कोऽपि निरस्ततर्को विश्रान्तुं नार्हति स्म । अथैता दृशी काचिदभिनवाऽनुवादसृष्टिः संस्कृतसाहित्यक्षेत्रे सरसामृतवृष्टिरिव समापतितेति मदीया मतिः ।

अनुवादक्रमे यत्काठिन्यमनुभूतं तत्तु स्पष्टीकृतमनुवादकृता तत्राऽऽङ्गलमय्यां भूमिकायाम् । वस्तुतस्तत्काठिन्यं द्वयोर्भाषयोः प्रकृतिभिन्नत्वकारणादेव । तत्र उर्दूभाषायाः शब्दाः, क्रियापदानि तेषाञ्च प्रयोगो व्यवहारे वाऽथ च संवादसरणौ प्रयुक्ता आभाणकाः कथं तत्र संस्कृते तथैवाभिव्यक्ताः स्युरिति समस्या पदे-पदे व्यात्ताननो हि सच्चकृतष्पद इव तिष्ठति । किन्तु सा सर्वा श्वेतकेतुना साध्यवसायं सुष्ठु साधिता । उपन्यासे तत्र तत्र या गजलगीतयो विन्यस्तास्सन्ति तासामपि यथोचितं छन्दोबद्धोऽनुवादः प्रस्तुतः । ग्रन्थस्य भूमिकायामनुवादकृता स्वीयोऽनुवादप्रविधिरपि विशदीकृतः । मूललेखकस्य मिर्ज़ारुस्वामहोदयस्य शब्दप्रयोगान् (यथा- मुआ, मुजी, निगोड़मार, निगोड़ा। निगोड़ी, अमाँ, म्याँ ---- बे, अबे) सङ्केतयताऽनेनोक्तमेव यदेतेषां सहजप्रयुक्तानां शब्दानामर्थसंरक्षणपूर्वकमनुवादो विधेय इति मया तथा प्रयतितम् । क्वचित्तूपन्यासे प्रयुक्ता मूल (उर्दू) शब्दा अनुवादे यथावत् समायोजिताः । असाधारणः खल्वयमनुवादः । अत्र विशदे दर्पणे प्रतिबिम्ब इव स्पष्टमालक्ष्यते श्वेतकेतोः सारस्वतश्रमः, तस्य निष्ठा, तस्य विषयलयनं लगनं वा । निश्चप्रचमयमनुवादो मूलस्य प्रतीतिं कारयति । पाठकं सहृदयं तस्यामेव भावभूमौ नयति स्थापयति, यत्र लेखको मिर्ज़ारुस्वाऽपराऽनुवादकशिरोमणि श्वेतकेतुर्विराजते । कस्यचित् सार्थकस्य सफलस्यानुवादस्यैतदेव वैशिष्ट्यम् । अनुवादे ये येऽभिलषिता गुणास्तेऽत्र विशदतया सम्प्राप्ता इत्यत्र न कोऽपि सन्देहलेशः । चेत्काचिन्न्यूनता सर्वथा दोषैकदृष्टिधिया सूक्ष्मान्वेषणात् आविष्कृता सोऽपि गुणसन्निपाते इन्दोः कलङ्क इव स्वनाशोभायै इति मन्ये ।

अलं तावद् विस्तरेण । अहं ब्रवीमि — "विलक्षणोऽयमनुवादः । एतावानस्य महिमा यो न मे सांख्यानुमानपारिधौ समायाती" ति ॥

श्वेतकेतोर्नमस्याऽस्ति रुची रम्या यशस्विनी ।
यया सृष्टोऽनुवादोऽयमदा जानोमरावतः ॥
श्वेतकेतुस्तु धन्योऽस्ति धन्यस्तस्य श्रमो महान् ।
धन्या संस्कृतसेवाऽपि उर्दूप्रेम ततः परम् ॥
पठन्तु सुधियः सर्वे संस्कृतस्य रसप्रियाः ।
मिर्ज़ारुस्वाकृतं ग्रन्थं श्वेतकेतोः प्रसादतः ॥
अनुवादमिमं दृष्ट्वा कस्य मोदो न जायते ।
प्रसन्नेन मया किञ्चिल्लिखितं तच्छुभं भवेत् ॥

॥ इति शम् ॥

16/7/17

आवास : डी 65/421 पी एन 2, निर्मल नगर, फुलवरिया मार्ग, लहरतारा, वाराणसी - 221002 (भारत)
Resi. D 65/421 PN-2, Nirmal Nagar, Fulwaria Road, Lahartara, Varanasi-221002
Tel.: 0542-2373815, Mob. No.: (O) 9415291980, email : dr.p.n.dwivedi@gmail.com

किन्तु स सविनयं स्वकीयमसामर्थ्यमभिधाय "एतद्विशिष्टं कार्यं भवतैव युवसंस्कृतविदुषा सम्भाव्यत" इति प्रतिवचनं विधाय निवेदकममुं श्वेतकेतुमेवाधिकृतवान्। तस्यानेन वचसा विस्मितः सस्मितं स्वीचकार नियोगमिमं धीरो गभीरोऽनुवादवीरः श्वेतकेतुः श्वेतश्यामं कर्तुम्। ततो महता प्रयत्नेन उर्दू-भाषा सर्वात्मनाऽऽत्मसात्कृत्वा तद्गणिकावृत्तं तत्त्वतोऽधीत्य मनसा स्निग्धं संयोज्यानुवादकर्मणि व्यापृतोऽभूत्। *'यस्य यस्मिन्मनो रमते स तदेव सेवते'* इति नितान्तं व्यावहारिकं तथ्यं चरितार्थतां नीयमानस्य प्रतापस्य प्रतापतः 'उमराव जान' इत्यस्य अदा

कदा विगलिता संस्कृतभाषया तदनुवादसौभाग्यं समापन्नेति कश्चिदानुमानिकः सतर्कोऽपि निरस्ततर्को विज्ञातुं नार्हति स्म। अथैतादृशी काचिदभिनवाऽनुवादसृष्टिः संस्कृतसाहित्यक्षेत्रे सरसामृतवृष्टिरिव समापतितेति मदीया मतिः।

अनुवादक्रमे यत्काठिन्यमनुभूतं तत्तु स्पष्टीकृतनुवादकृता तत्राऽङ्ग्लमय्यां भूमिकायाम्। वस्तुत एतत्काठिन्यं द्वयोर्भाषयोः प्रकृतिभिन्नत्वकारणादेव। तत्र उर्दूभाषायाः शब्दाः, क्रियापदानि तेषाञ्च प्रयोगो व्यवहारो वा अथ च संवादसरणौ प्रयुक्ता आभाणकाः कथं तत्र संस्कृते तथैवाभिव्यक्ताः स्युरिति समस्या पदे पदे व्यात्ताननो हिंस्रचतुष्पद इव तिष्ठति। किन्तु सा सर्वा श्वेतकेतुना साध्यवसायं सुष्ठु साधिता। उपन्यासे तत्र तत्र या गजलगीतयो विन्यस्तास्सन्ति तासामपि यथोचितं छन्दोबद्धोऽनुवादः प्रस्तुतः। ग्रन्थस्य भूमिकायामनुवादकृता स्वीयोऽनुवादप्रविधिरपि विशदीकृतः। मूल लेखकस्य 'मिर्ज़ारुस्वा'-महोदयस्य शब्दप्रयोगान् (यथा - मुआ, मूजी, निगोड़मार, निगोड़ा, निगोड़ी, अमाँ, म्याँ, बे, अबे) सङ्केतयताऽनेनोक्तमेव यदेतेषां सहजप्रयुक्तानां शब्दानामर्थसंरक्षणपूर्वकमनुवादो विधेय इति मया तथा प्रयतितम्। क्वचित्तून्यासे प्रयुक्ता मूल-(उर्दू)-शब्दा अनुवादे यथावत् समायोजिताः। असाधारणः खल्वयमनुवादः। अत्र विशदे दर्पणे प्रतिबिम्ब इव स्पष्टमालक्षते श्वेतकेतोः सारस्वतश्रमः, तस्य निष्ठा, विषयलयनं लगनं वा। निश्चप्रचमयमनुवादो मूलस्य प्रतीतिं कारयति, पाठकं सहृदयं तस्यामेव भावभूमौ नयति, स्थापयति च यत्र लेखको 'मिर्जा-रुस्वा' अथवाऽनुवादकशिरोमणिः श्वेतकेतुर्विराजते। कस्यचित् सार्थकस्य सफलस्यानुवादस्यैतदेव वैशिष्ट्यम्। अनुवादे ये येऽभिलषिता गुणास्तेऽत्र विशदतया सम्प्राप्ता इत्यत्र न कोऽपि सन्देहलेशः। चेत्काचिन्न्यूनता सर्वथा दोषैकदृष्टिधिया सूक्ष्मान्वेषणत आविष्कृता साऽपि गुणसन्निपाते इन्दोः कलङ्क इव रचनाशोभायै इति मन्ये।

अलं तावद् विस्तरेण। अहं ब्रवीमि विलक्षणोऽयमनुवादः। एतावानस्य महिमा यो न मे संख्यानुमानपरिधौ समायातीति-

श्वेतकेतोर्नमस्याऽऽस्ति रुची रम्या यशस्विनी।
यया सृष्टोऽनुवादोऽयमदाजानोमरावतः॥
श्वेतकेतुस्तु धन्योऽस्ति धन्यस्तस्य श्रमो महान्।
धन्या संस्कृतसेवापि उर्दू-प्रेम ततः परम्॥
पठन्तु सुधियः सर्वे संस्कृतज्ञा रसप्रियाः।
मिर्ज़ा-रुस्वा-कृतं ग्रन्थं श्वेतकेतोः प्रसादतः॥
अनुवादमिमं दृष्ट्वा कस्य मोदो न जायते।
प्रसन्नेन मया किञ्चिल्लिखितं तच्छुभं भवेत्॥
इति शम्॥
चैत्र शुक्ल द्वितीया 2074 विक्रमी
16 April, 2017